

Chapter- 9: भारतीय राजनीति: नए बदलाव

- आपने पिछले अध्याय में पढ़ा था कि इंदिरा गाँधी की हत्या के बाद राजीव गाँधी प्रधानमंत्री बने इंदिरा गाँधी की हत्या के कुछ दिनों बाद ही 1984 में लोकसभा के चुनाव हुए राजीव गाँधी की अगुवाई में कांग्रेस को इस चुनाव में भारी विजय मिली 1980 के दशक के आखिर के सालों में देश में ऐसे पांच बड़े बदलाव आए, जिनका हमारी आगे की राजनीति पर गहरा असर पड़ा
- पहला इस दौर की एक महत्वपूर्ण घटना 1989 के चुनावों में कांग्रेस की हार है जिस पार्टी ने 1984 में लोकसभा की 415 सीटें थीं वह इस चुनाव में हज 197 सीटें ही जीत सकी 1991 में एक बार फिर मध्यावधि चुनाव हुए और कांग्रेस इस बार अपना आँकड़ा सुधरते हुए सत्ता में आयी बहरहाल 1989 में ही उस परिघटना की समाप्ति हो थी 1989 के बाद भी देश पर किसी अन्य पार्टी के अजाय शासन ज्यादा दिनों तक रहा
- इस तरह 1989 के चुनावों से भारत में गठबन्धन की राजनीतिक के एक लंबे दौर की शुरुआत हुई इसके बाद से केंद्र में 9 सरकारों बनी यह बात 1989 के राष्ट्रीय मोर्चा सरकार 1996 और 1997 की संयुक्त मोर्चा सरकार 1998 और 1999 की राजग तथा 2004 की संप्रग सरकारों पर समान रूप से लागू होती है
- पाँचवे अध्याय में हम यह बात पढ़ चुकी है कि 1960 के दशक से विभिन्न समूह कांग्रेस पार्टी से अलग होने लगे और इन्होंने अपनी खुद की पार्टी बनायी कि 1977 के बाद के सालों में कई क्षेत्रीय दलों का उदय हुआ इन सारे कारणों से कांग्रेस पार्टी कमजोर हुई लेकिन कोई दूसरी पार्टी इस तरह से नहीं उभरा पायी कि कांग्रेस का विकल्प बने सके
- 1980 के दशक में अन्य पिछड़ा वर्गों के बीच लोकप्रिय ऐसे ही राजनितिक समूहों को जनता दल ने एकजुट किया राष्ट्रीय मोर्चा की सरकार ने मंडल आयोग की सिफारिशों को लागू करने का फैसला किया अन्य पिछड़ा वर्ग की राजनीती को सुगठित रूप देने में मदद मिली
- दक्षिण के राज्यों में अगर बहुत पहले से नहीं तो भी कम-से-कम 1960 के दशक से अन्य पिछड़ा वर्ग के लिए आरक्षण का प्रावधान चला आ रहा था

1977-79 की जनता पार्टी की सरकार के समय उतर भारत में पिछड़े वर्ग के लिए राष्ट्रीय स्तर पर मजबूती से आवाज उठी गई

- 1980 में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) बनाई बहरहाल भाजपा को 1980 और 1984 के चुनावों में खास सफलता नहीं मिली 1986 के बाद इस पार्टी ने अपनी विचारधारा में हिन्दू राष्ट्रवाद के तत्वों पर जोर देना शुरू किया
- 1100 व्यक्ति जिनमें ज्यादातर मुसलमान थे इस हिस्से में मारे गए 1984 के सिख-विरोधी दंगों के समान गुजरात के दंगा से भी यह जाहिर हुआ राजनीतिक उद्देश्यों के लिए धार्मिक भावनाओं को भड़काना खतरनाक हो सकता है इससे हमारी लोकतांत्रिक राजनीतिक को खतरा पैदा हो सकता है
- 1989 के बाद से उन्हें इतने वोट नहीं मिली कि वे कुल मतों के 50 फीसदी से ज्यादा हो आप देखेंगे कि ये सीटें लोकसभा की कुल सीटों के 50 फीसदी से अधिक नहीं हैं तो बाकी वोट और सीटें कहाँ गए ?
- 2004 के चुनावों में एक हद तक कांग्रेस का पुनरुत्थान भी हुआ 1991 के बाद इस पार्टी की सीटों की संख्या एक बार फिर बढ़ी 1990 के बाद से हमारे सामने जो राजनीतिक प्रक्रिया आकर ले रही है ,
- जन आन्दोलन और संगठन विकास के नए रूप स्वप्न और तरीकों की पहचान कर रहे हैं गरीबी विश्वास न्यूनतम मजदूरी आजीविका और सामाजिक सुरक्षा के मामले जन आन्दोलन के जरिए राजनीतिक एजेंडे के रूप में सामने आ रहे हैं